Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान

सामान्य अध्ययन

इतिहास

एवं कला संस्कृति

SIERRA
INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत	1
2	राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग	9
3	राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास और राजपूतों की उत्पत्ति	18
4	मेवाड़ का इतिहास	21
5	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	36
6	गुर्जर प्रतिहार वंश व परमार वंश	46
7	चौहानों का इतिहास	51
8	आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश)	63
9	जैसलमेर का भाटी वंश	74
10	करौली–भरतपुर का इतिहास	78
11	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	81
12	राजस्थान में किसान आंदोलन	89
13	राजस्थान की प्रशासन और राजस्व व्यवस्था	96
14	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	102
15	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	110
16	प्रजामंडल आंदोलन	118
17	राजस्थान में जनजातीय आंदोलन	127
18	प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी एवं व्यक्तित्व	131
19	राजस्थान की चित्रकला	146
20	राजस्थान की हस्तशिल्प कला	157
21	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	165
22	राजस्थान के लोक संगीत और वाद्य यंत्र	169
23	राजस्थान के लोक नृत्य	179

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राजस्थान के लोक नाट्य	186
25	राजस्थान का साहित्य	191
26	राजस्थान के संत और लोक देवी – देवता	203
27	राजस्थान के मेले और त्योहार	216
28	राजस्थान के आभूषण एवं वेशभूषा	228
29	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	234
30	राजस्थान के प्रमुख रीति–रिवाज एवं प्रथाएँ	257

1 CHAPTER

राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत

- **राजस्थान इतिहास के जनक** - कर्नल जेम्स टॉड ।
  - वर्ष 1818 से 1821 ई. के मध्य **मेवाड़** (उदयपुर) प्रांत के **पोलिटिकल एजेन्ट** थे।
  - इन्हें लोग **घोडे वाले बाबा** कहते थे।
  - **एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ़ राजस्थान/ सेन्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ इंडिया** - लन्दन में वर्ष 1829 में प्रकाशन ।
  - गौरी शंकर हीराचन्द ओझा - **सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद**।
  - **अन्य पुस्तक** - ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया
  - **मृत्यु पश्चात वर्ष** 1837 में पत्नी द्वारा **प्रकाशन** ।
- **राजस्थान** में पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य सर्वप्रथम (1871 ई) प्रारम्भ करने का **श्रेय ए.सी.एल. कार्लाइल** को जाता है।
  [L.S.A. 2016]

राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्त्रोत

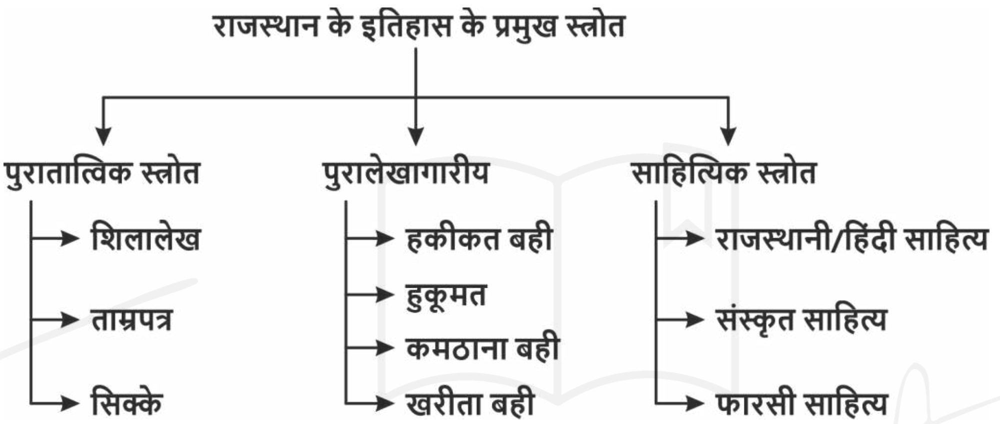

शिलालेख

रायसिंह प्रशस्ति (बीकानेर 1594 ई. में) [Const – 2018]	• प्रशस्तिकार- जैन मुनि जैइता। • इसमें राव बीका से लेकर राव रायसिंह तक के बीकानेर के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन है । • इसके अनुसार बीकानेर दुर्ग का निर्माण 30 जनवरी, 1589 से 1594 ई. तक राव रायसिंह ने अपने मंत्री करमचंद द्वारा पूरा करवाया था।
मंडोर अभिलेख (837 ई में जोधपुर)	• यह गुर्जर नरेश बाउक की प्रशस्ति है। • इस में गुर्जर प्रतिहारों की वंशावली, विष्णु एवं शिव पूजा का उल्लेख किया गया है।
सच्चियाय माता की प्रशस्ति (1179 ई. ओसिया, जोधपुर)	• सच्चियाय माता के मंदिर, में उत्कीर्ण किया गया है। • इसमें कल्हण को महाराजा एवं कीर्तिपाल को मांडव्यपुर का अधिपति बताया गया है।
बिजौलिया शिलालेख [BCI – 2022/ Agri of - 2021/[PTI -2018/CET - 2023	• 1170 ई. में इसे बिजौलिया के पार्श्वनाथ मन्दिर परिसर की एक बड़ी चट्टान पर संस्कृत में उत्कीर्ण किया गया। • इस अभिलेख की स्थापना जैन **श्रावक लोलक द्वारा** कराई गई थी तथा इसके लेखक **कायस्थ केशव** थे। • रचयिता- गुणभद्र। • इसमें सांभर व अजमेर चौहानों को **वत्सगोत्रीय ब्राह्मण बताते** हुए वंशावली दी गई है। • चौहान राजा सोमेश्वर के शासन काल में • जाबालिपुर (जालौर), शाकम्भरी, श्रीमाल जैसे प्राचीन नगरों का उल्लेख है

घटियाला अभिलेख (861 ई.) [Lab Ass – 2022/VDO Mains – 2022/2nd Grade - 2023]	• प्रतिहार राजा – कक्कुक • मंडोर (जोधपुर) • भाषा – संस्कृत • आभीरो पर विजय • मग' जाति के ब्राह्मणों का उल्लेख
बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई. सिरोही)	• यह बसंतगढ़ (सिरोही) के क्षेमकरी (खिमेल) माता मंदिर से प्राप्त हुआ है। • यह अर्बुद देश के राजा वर्मलात के सामंत रज्जिल तथा रज्जिल के पिता वज्रभट्ट (सत्याश्रय) का वर्णन करता है। • इस अभिलेख में राजस्थान शब्द का प्राचीनतम प्रयोग **'राजस्थानीयादित्य' के रूप में किया गया है।**
चिडवा\चिरवा का अभिलेख (1273 ई. \ वि.सं. 1330 उदयपुर) [Patwar – 2016/JEN(Agri)-2022]	• **प्रशस्तिकार** – रत्नप्रभ सूरी • **इसके शिल्पी** – देल्हण • **भाषा -संस्कृत** • गुहिल वंशीय बप्पा के वंशधर पदम सिंह, जैत्र सिंह, तेज सिंह और समर सिंह की उपलब्धियो का उल्लेख • एकलिंगजी के अधिष्ठाता पाशुपत योगियों के अग्रणी शिवराशि का भी वर्णन किया गया है।
अपराजित का शिलालेख [Raj Police – 2018]	• 661 ई. में उदयपुर जिले के नागदे गाँव के निकट कुंडेश्वर मंदिर की दीवार पर अंकित किया गया। • रचयिता - दामोदर • 7वीं सदी के मेवाड़ के इतिहास की जानकारी।
सामोली अभिलेख (646) (उदयपुर)	• इसके अनुसार वटनगर (सिरोही) से आये हुए महाजन समुदाय के मुखिया जैतक महत्तर ने अरण्यवासिनी देवी (जावर माता का) मंदिर बनवाया था। • जैतक महत्तर ने 'बुक' नामक सिद्धस्थान पर अग्नि समाधि ले ली। • यह अभिलेख जावर के निकट अरण्यगिरी में ताँबे व जस्ते के खनन उद्योग की जानकारी देता है।
आमेर का लेख (1612 ई**)**	• इसमें कछवाहा वंश को **रघुवंशतिलक"'** कहकर संबोधित किया गया है। • इसमें पृथ्वीराज एवं उसके पुत्र भगवानदास और उसके पुत्र महाराजधिराज मानसिंह के नाम क्रम से दिए गए हैं।
भाब्रू शिलालेख	• यहाँ अशोक मौर्य के 2 शिलालेख मिले हैं • यह 1837 ई. में "बीजक की पहाड़ी से कैप्टन बर्ट द्वारा खोजा गया था। • वर्तमान में यह कलकता संग्रहालय में रखा है। • इससे अशोक के बुद्ध धर्म का अनुयायी होना सिद्ध होता है। • इसे मौर्य सम्राट अशोक ने स्वयं उत्कीर्ण करवाया था।
घोसुण्डी शिलालेख [ARO-2022/Agri Sup – 2021 /2nd Grade - 2022/Lab Ass - 2022]	• घोसुण्डी, चित्तौडगढ़ से प्राप्त हुआ। • भाषा -संस्कृत, लिपि- ब्राह्मी | • सर्वप्रथम डी. आर. भंडारकर द्वारा पढ़ा गया। • **वैष्णव या भागवत** संप्रदाय से संबंधित। • एक बड़ा खण्ड उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित | • अश्वमेध यज्ञ करने और विष्णु मंदिर की चारदीवारी बनवाने का वर्णन है।
नगरी का शिलालेख (200-150 ई.पू)	• ब्राह्मी लिपि में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण किया गया है। • इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख से मिलती है। • घोसुण्डी शिलालेख नगरी शिलालेख में जुड़वा अभिलेख| • राजस्थान वर्तमान में राजस्थान के उदयपुर संग्रहालय में स्थित।
मानमोरी का शिलालेख (सन 713 ई.) [वनपाल -2022/JEN -2019]	• मौर्य वंश से सम्बंधित यह लेख **चित्तौड के पास मानसरोवर** झील के तट से कर्नल टॉड को मिला था। • इसका प्रशस्तिकार **नागभट्ट का पुत्र पुष्य** है और उत्कीर्णक करुण का पौत्र **शिवादित्य** है। • चित्रांगद मौर्य का उल्लेख है जिसने चित्तौडगढ़ का निर्माण करवाया। • कर्नल जेम्स टॉड ने इसे इंग्लैंड ले जाते समय असंतुलन की वजह से समुद्र में फेंक दिया था। • इसमें भीम को अवन्तिपुर का राजा बताया है।

राज प्रशस्ति (1676 ई./वि.स. 1732) [Lab Ass - 2022/JEN 20/22 जेल प्रहरी -2018	• प्रशस्तिकार- रणछोड़ भट्ट तैलंग द्वारा। • महाराणा राजसिंह सिसोदिया के समय स्थापित करवाया गया था। • यह राजसमन्द झील की 9 चौकी की पाल पर 25 श्लोकों में उत्कीर्ण विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति है। • इसमें बापा रावल से लेकर राणा जगतसिंह द्वितीय तक की गुहिलों की वंशावली है। • इसमें महाराणा अमरसिंह द्वारा की गई **मुगल मेवाड संधि** का वर्णन है।
कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.) [जेल प्रहरी – 2017]	• प्रशस्तिकार उत्कीर्णक /- कवि महेश • राजस्थान के राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भश्याम मंदिर में स्थित पाँच शिलाओं में उत्कीर्ण है। • इसमें बाप्पा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है। • इसमें हम्मीर का चेलावाट जीतने का वर्णन है और **उसे विषमघाटी पंचानन** कहा गया है। • उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है।
कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति (1460 ई.) [Forest Guard-2022]	• **प्रशस्तिका**र- महेश भट्ट • **रचयिता**- अत्रि और महेश • यह राणा कुम्भा की प्रशस्ति है। • इसमें राणा कुम्भा को महाराजाधिराज, अभिनव भरताचार्य, हिन्दू सुरताण, रायरायन, राणो रासो छापगुरु, दानगुरु, राजगुरु, शैलगुरु आदि के नाम से संबोधित किया गया है। • इसमें मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं को कुम्भा द्वारा पराजित किये जाने का वर्णन किया गया है।
रणकपुर प्रशस्ति (1439 ई. या वि.सं. 1496), पाली	• इसे रणकपुर के चौमुखा मंदिर में उत्कीर्ण करवाया गया। • **प्रशस्तिकार** - दैपाक • मेवाड के राजवंश एवं भरणक सेठ के वंश का परिचय मिलता है। • बप्पा एवं कालभोज को अलग- अलग व्यक्ति बताया गया है। • गुहिलों को बाप्पा रावल के पुत्र बताया गया है।
जगन्नाथराय प्रशस्ति	• प्रशस्तिकार - कृष्णभट्ट • इसमें बाप्पा रावल से लेकर जगतसिंह सिसोदिया तक गुहिलों का वर्णन है। • यह उदयपुर के जगन्नाथ राय मंदिर में स्थित है। • प्रताप के समय लड़े गए हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन किया गया है। • प्रशस्ति के अनुसार महाराणा ने पिछोला के तालाब में मोहन मंदिर बनवाया और रूपसागर तालाब का निर्माण करवाया।
श्रृंगी ऋषि का शिलालेख (1428 ई. उदयपुर)	• मोकल द्वारा कुण्ड बनाने और उसके वंश का वर्णन किया गया है। • रचनाकार कविराज वाणी बिलारा योगेश्वर
बरनाला अभिलेख (278 ई.) [Statistical Officer- 2021]	• वैष्णव सम्प्रदाय • जयपुर

अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ

नाम	स्थान	काल	विवरण
बडली \बरली का शिलालेख [PRO-2019/JEN-2022	अजमेर (भिलोट माता के मन्दिर से)	दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व	• राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख • ब्राह्मी लिपि • वर्तमान में अजमेर संग्राहलय में सुरक्षित है।
नान्दसा यूप स्तम्भ लेख	भीलवाड़ा	225 ई.	• सोम द्वारा स्थापना
बड़वा यूप अभिलेख [Patwar -2016/JEN (Agri) -2022]	कोटा (बडवा गाँव में)	238-39 वि.सं./ 181 ई. में	• भाषा - संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी • मौखरी राजाओं का वर्णन मिलता है सबसे पुराना और पहला अभिलेख। • तीन यूप (स्तंभ) पर उत्कीर्ण है।
भ्रमरमाता का लेख	चित्तौड़	490 ई.	• गौर वंश और औलिकर वंश के शासकों का वर्णन मिलता है। • रचयिता – ब्रह्मसोम (मित्रसोम के पुत्र) • लेखक - पूर्वा

Unleash the topper in you

दस्तूर कौमवार [वनपाल -2022]	जयपुर		• दस्तूर कौमवार जयपुर राज्य के अभिलेखों की महत्वपूर्ण अभिलेख शृंखला है • जयपुर रियासत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
कणसवा अभिलेख	कोटा	738 ई.	• मौर्य वंशी राजा धवल का उल्लेख (शायद राजस्थान का अंतिम मौर्य शासक)।
ग्वालियर प्रशस्ति [2nd Grade -2023/COPA -2019]		880 ई.	• मिहिरभोज प्रथम की देंन • संस्कृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण • लेखक – भट्टधनिक का पुत्र बालादित्य • गुर्जर प्रतिहारों के वंशावलियों एवं उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है।
प्रतापगढ़ अभिलेख	प्रतापगढ़	946 ई.	• गुर्जर प्रतिहार नरेश महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन है।
अचलेश्वर प्रशस्ति	आबू		• इसमें पुरुष के अग्निकुंड से उत्पन्न होने का उल्लेख है। • धूम्रराज को परमारों का मूल पुरुष या आदि पुरुष माना जाता है।
लूणवसही की प्रशस्ति	आबू-देलवाड़ा	1230 ई.	• भाषा - संस्कृत • इसमें आबू के परमार शासकों और वास्तुपाल तेजपाल के वंश का वर्णन है
नाथ प्रशस्ति [वनपाल – 2022]	लकुलिश मंदिर (उदयपुर)	971 ई.	• मेवाड़ के इतिहास का वर्णन • भाषा – संस्कृत • लिपि - देवनागरी
नेमीनाथ की प्रशस्ति	आबू	1230 ई.	• रचयिता - सोमेश्वरदेव (शुभचन्द्र) [Raj Police -2018] • सुरथोत्सव के रचयिता (शुभचन्द्र) –[2nd Grade – 2022] • इसे सूत्रधार चण्डेश्वर ने खोदा था।
रसिया की छतरी का लेख	चित्तौड़गढ़	1331	• रचयिता - प्रियपटु के पुत्र नागर जाति के ब्राह्मण वेद शर्मा। • उत्कीर्णकर्ता - सूत्रधार सज्जन • इसमें गुहिल को बापा का पुत्र बताया गया है।
माचेड़ी की बावली का दूसरा शिलालेख	अलवर	1458 ई.	• इसमें अलवर में बड़ गुर्जर वंशी रजपालदेव राज्य पर अधिकार होने का वर्णन है।
बरबथ का लेख	बयाना	1613-14 ई.	• इसमें अकबर की पत्नी मरियम उस -ज़मानी के द्वारा बरबथ में एक बाग़ और बावड़ी का निर्माण करने का उल्लेख है।
बर्नाला यूप स्तम्भ लेख	जयपुर	227 ई.	
चाकसु अभिलेख	जयपुर	813 ई.	• गुहिल वंशीय भरत्रभट्ट और उसके वंशजों का वर्णन है। • सूत्रधार – देइआ
बुचकला अभिलेख	जोधपुर(बिलाडा)	815 ई.	• वत्सराज के पुत्र नागभट्ट प्रतिहार का उल्लेख है।
राजौरगढ़ अभिलेख	अलवर	960 ई.	• मथनदेव प्रतिहार
हर्ष अभिलेख [JEN -2016]	सीकर	973 ई.	• चौहानों के वंशक्रम का उल्लेख । • हर्षनाथ (सीकर) मंदिर का निर्माण अल्लट द्वारा करवाये जाने का उल्लेख। • वागड़ को वार्गट कहा गया।
रसिया की छतरी का शिलालेख [प्रवक्ता (DoTE) – 2021]	चित्तोड़गढ़	1274 ई.	• गुहिल वंशीय शासकों की जानकारी (बप्पा से नरवर्मा तक)। • रचनाकार- प्रियपटु के पुत्र वेद शर्मा
डूंगरपुर की प्रशस्ति	डूँगरपुर	1404 ई	• उपरगाँव (डूँगरपुर) में में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण। • वागड़ के राजवंशों के इतिहास का वर्णन।

Unleash the topper in you

सिक्के

- **सर्वप्रथम राजस्थान** के **चौहान वंश** ने मुद्राएँ जारी की।
  - **ताँबे के सिक्के -** द्रम्म और विशोपक
  - **चाँदी के सिक्के** - रूपक
  - **सोने के सिक्के** - दीनार
- मेवाड़ में प्रचलित सिक्के –
  - **ताँम्बे के सिक्के-** ढिंगला, भिलाडी. त्रिशुलिया, भिन्डीरिया, नाथद्वारिया।
  - **चाँदी के** सिक्के- द्रम्म , रूपक।
- अकबर ने राजस्थान में **सिक्का एलची** जारी किया। (चित्तोड़ विजय के बाद)।
  - **अकबर ने आमेर में सर्वप्रथम टकसाल** खोलने की अनुमति दी।
- **राजस्थान के प्राचीन सिक्के**
- अंग्रेजों के समय जारी **मुद्राओं में कलदार** (चाँदी) **सर्वाधिक प्रसिद्ध**

महत्वपूर्ण तथ्य

- तत्कालीन राजपूताना की रियासतों के सिक्कों के विषय पर **केब** ने **1893 ई**.में "**द करेंसी ऑफ द हिंदू स्टेट ऑफ राजपूताना"** नामक पुस्तक लिखी।
- रैढ़ (टोंक) में खुदाई के दौरान 3075 चाँदी के पंचमार्क सिक्के मिले हैं इन सिक्कों को धरण या पण कहा जाता था।
- समयकाल 600 ई. पू. - 200 ई. पू. [ARO -2022]
- रंगमहल (हनुमानगढ़) से आहत मुद्रा एवं कुषाण कालीन मुद्राएँ मिली है।
- बैराठ सभ्यता (कोटपुतली-बहरोड़) से भी अनेक मुद्राएँ मिली है जिनमें से 16 मुद्राएँ प्रसिद्ध यूनानी शासक मिनेण्डर की है।
- इंड़ो - सासानी सिक्कों की भारतीयों ने गधिया नाम से पहचान की है जो चाँदी और ताम्र धातु के बने हुए होते थे।
- मेवाड़ के स्वरूपशाही और मारवाड़ के आलमशाही सिक्के ब्रिटिश प्रभाव वाले थे जिनमें "औरंग आराम हिंद एवं इंग्लिस्तान क्वीन विक्टोरिया" लिखा होता था।
- राजस्थान में सर्वप्रथम 1900 ई. में स्थानीय सिक्कों के स्थान पर कलदार का चालान जारी हुआ।

रियासत	सिक्के
बीकानेर	गजशाही सिक्के (चाँदी), गंगाशाही (विक्टोरिया एम्प्रैस) [RAS -2013]
जैसलमेर	मुहम्मदशाही, अखैशाही, डोडिया (ताँबा) [जेल प्रहरी – 2017]
उदयपुर	स्वरूपशाही, चांदोडी, शाहआलमशाही, ढीन्गाल, त्रिशुलियाँ, भिलाडी, कर्षापण, भीड़रिया, पदमशाही, ' गाधिया' [अन्वेषण -16 /जेल प्रहरी –18]
चितौड़	एलची, चांदोड़ी रुपया, अठन्नी, चवन्नी, दो अन्नी,एक अन्नी [JEN -2020]
डूँगरपुर	उदयशाही, त्रिशूलिया, पत्रिसीरिया, चित्तौडी, सालिमशाही सिक्का।
बाँसवाड़ा	सालिमशाही सिक्का , लक्ष्मणशाही
प्रतापगढ	सालिमशाही, मुबारकशाही, सिक्का मुबारक, लंदन सिक्का।
शाहपुरा	संदिया, मधेशाही, चित्तौडी, भिलाड़ी सिक्का
कोटा	गुमानशाही, हाली, मदनशाही सिक्के
झालावाड	पुराने और नए मदनशाही सिक्के
करौली	माणकशाही
धौलपुर	तमंचाशाही सिक्का
भरतपुर	शाहआलमा
अलवर	अखैशाही, रावशाही सिक्के, ताँबे के रावशाही सिक्का, अंग्रेजी पाव आना सिक्का [जेल प्रहरी –18]
जयपुर	झाड़शाही, मुहम्मदशाही, हाली। [CET -2023]
जोधपुर	विजयशाही, भीमशाही, गदिया, गजशाही, लल्लूलिया रुपया।
सोजत	लल्लूलिया (पाली) एवं लाल्लुशाही सिक्के [जेल प्रहरी –18]
सलूम्बर	पदमशाही (ताम्रमुद्रा)
किशनगढ़	शाहआलमी
बूँदी	रामशाही सिक्का ग्यारह- सना, कटारशाही, चेहरेशाही, पुराना रुपया।
नागौर की टकसाल	अमरशाही, कुचामनिया सिक्का (कुचामन टकसाल) इसे **इक्तिसंदा, बोपुशाही, बोरसी** भी कहते है। [Patwar Mains – 2016]
पाली	बिजैशाही
सिरोही	चाँदी की भिलाड़ी, ताँबे का ढब्बूशाही
सलूम्बर	पदमशाही Coll Lect-2016/ BCI -2022

ताम्रपत्र

राजस्थान के प्रमुख ताम्र पत्र

ताम्र पत्र	काल	के बारे में
धुलेव का दान पत्र	679 ई.	• किष्किंधा (कल्याणपुर) के राजा भेटी द्वारा उब्बरक नामक गांव को भट्टिनाग नामक ब्राह्मण को अनुदान देने का उल्लेख।
ब्रोच गुर्जर ताम्रपात्र	978 ई.	• गुर्जर वंश के सप्तसैंधव भारत से लेकर गंगा कावेरी तक के अभियान का वर्णन। • इसके आधार पर कनिंघम ने राजपूतों को कुषाणों की यू-ए-ची जाति माना।

मथनदेव का ताम्र-पत्र	959 ई.	• मंदिर के लिए भूमि दान की व्यवस्था का उल्लेख है।
वीरपुर का दान पत्र	1185 ई.	• इसमें गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के सामंत वागड़ के गुहिल वंशीय राजा अमृतपालदेव के सूर्यपर्व पर भूमिदान देने का उल्लेख है।
आहड़ ताम्र-पत्र	1206 ई.	• गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव (द्वितीय) का है। • गुजरात के मूलराज से भीमदेव द्वितीय तक सोलंकी राजाओं की वंशावली दी गई है ।
पारसोली का ताम्र-पत्र	1473 ई.	• महाराणा रायमल के समय का है। • भूमि की किस्मों का उल्लेख – पीवल, गोरमो, माल, मगरा । ○ यह भूमि उस समय की सभी लागतों से मुक्त थीं।
खेरादा ताम्र-पत्र	1437 ई.	• एकलिंगजी में राणा कुंभा द्वारा किए गए प्रायश्चित, उस समय का दान, धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
चीकली ताम्र-पत्र	1483 ई.	• किसानों से एकत्र किए जाने वाले 'विविध लाग-बागों' को दर्शाता है। • पटेल, सुथार और ब्राह्मणों द्वारा खेती का वर्णन। [JEN -2016]
ढोल का ताम्र-पत्र	1574 ई.	• महाराणा प्रताप के समय का है जब उन्होंने ढोल नामक एक गाँव की सैन्य चौकी का प्रबंधन किया था और अपने प्रबंधक जोशी पुणो को ढोल में भूमि अनुदान दिया।
पुर का ताम्र-पत्र	1535 ई.	• जौहर में प्रवेश करते समय हाड़ी रानी कर्मवती द्वारा दिए गए भूमि अनुदान के बारे में जानकारी । [वनरक्षक – 2022]
कोघाखेड़ी (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1713 ई.	• कोघाखेड़ी गाँव का उल्लेख जिसे महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने दिनकर भट्ट को हिरण्याशवदान में दिया था।
गाँव पीपली (मेवाड़) का ताम्रपात्र	1576 ई.	• स्पष्ट करता है कि हल्दीघाटी के युद्ध के बाद, महाराणा प्रतापसिंह ने मध्य मेवाड़ के क्षेत्र में लोगों को बसाने का काम शुरू किया।
कीटखेड़ी (प्रतापगढ़) का ताम्रपत्र	1650 ई.	• कीटखेड़ी गाँव के भट्ट विश्वनाथ को दान देने से संबंधित है। • राजमाता चौहान द्वारा निर्मित गोवर्धननाथजी के मंदिर की प्रतिष्ठा के समय दिया गया था।
डीगरोल गाँव का ताम्र-पत्र	1648 ई.	• महाराणा जगतसिंह के काल का है।
रंगीली ग्राम (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1656 ई.	• महाराणा राजसिंह के समय का है। ○ उन्होंने गंधर्व मोहन को रंगीला नामक गाँव दिया ○ गाँव में खड़, लाकड और टका की लागत को हटा लिया गया ।
बेडवास गाँव का दान पत्र	1643 ई.	• समरसिंह (बाँसवाड़ा) के काल का है। • हल भूमि दान का उल्लेख है।
राजसिंह का ताम्रपत्र	1678 ई.	• महाराणा राज सिंह के समय का है।
बेंगू का ताम्रपत्र	1715 ई.	• महाराणा संग्राम सिंह के समय का है।
बेडवास का ताम्र पत्र	1559 ई.	• उदयपुर बसाने के संवत् 1616 की पुष्टि पर प्रकाश डालता है।
लावा गाँव का ताम्रपत्र	1558 ई.	• महाराणा उदयसिंह ने लड़कियों की शादी के अवसर पर 'मापा' कर नहीं लेने आदेश ।

पुरालेखागारीय स्त्रोत

राज्य अभिलेखागार बीकानेर में निम्नलिखित बहियाँ **संग्रहीत** है -

- **हकीकत बही**- राजा की दिनचर्या का उल्लेख
- **हुकूमत बही** - राजा के आदेशों की नकल
- **कमठाना बही** - भवन व दुर्ग निर्माण संबंधी जानकारी
- **खरीता बही** - पत्राचारों का वर्णन

साहित्यिक स्त्रोत

महत्वपूर्ण तथ्य

- **रास** - 11वीं शताब्दी के आसपास जैन कवियों द्वारा रचा गया ।
- **रासो** - रास के समानांतर राजाश्रय में रासो साहित्य लिखा गया जिसके द्वारा तत्कालीन, ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के मूल्यांकन की आधारभूत पृष्ठभूमि निर्मित हुई ।

- **वेलि** - राजस्थानी वेलि साहित्य में यहाँ के शासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता, उदारता, प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंशावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है ।
- **ख्यात** - ख्यात का अर्थ होता है ख्याति अर्थात् यह किसी राजा महाराजा की प्रशंसा में लिखा गया ग्रंथ ।
  - यह वंशावली व प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रुप होता है।
  - ख्यात साहित्य गद्य में लिखा जाता है।

पृथ्वीराज रासो, चन्दबरदाई

- यह ग्रन्थ पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चन्दबरदाई द्वारा पिंगल भाषा में लिखा गया जिसे उसके पुत्र जल्हण द्वारा पूरा किया गया।
- इसमें गुर्जर-प्रतिहार, परमार, सोलंकी/ चालुक्य, और चौहानों की गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि के आबू पर्वत के अग्निकुंड से उत्पत्ति का उल्लेख है।

मुहणोत नैणसी री ख्यात

- यह मारवाड़ी और डिंगल में लिखा गया है।
- नैणसी (1610- 70 ई.) जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दरबारी कवि एवं दीवान थे।
- इसमें समस्त राजपूताने सहित जोधपुर के राठौड़ो का विस्तृत इतिहास लिखा गया है।

नैणसी को मुंशी देवी प्रसाद द्वारा "राजपूताने का अबुल फजल" कहा गया।

मारवाड़ रा परगना री विगत / गावां री ख्यात

- मुहणोत नैणसी द्वारा कृत है।
- बहुत बड़ी होने के कारण इसे “सर्वसंग्रह” भी कहा जाता है।
- इसे “राजस्थान का गजैटियर” भी कहा जाता है ।

बांकीदास री ख्यात / जोधपुर राज्य री ख्यात

- लेखक - बांकीदास (जोधपुर के महाराजा मानसिंह राठौड़ के दरबारी कवि) ।
- राठौड़ो और अन्य वंशों का विवरण है।
- मारवाड़ी और डिंगल भाषा में लिखी गई है।

दयालदास री ख्यात

- लेखक - दयालदास सिढायच (बीकानेर के महाराज रतनसिंह के दरबारी कवि) ।
- इसे मारवाड़ी (डिंगल) भाषा में लिखा गया है।
- इसमें बीकानेर के राठौड़ो के प्रारंभ से लेकर महाराजा सरदारसिंह तक का इतिहास लिखा गया है (2 भाग)

मुण्डियार री

- राव सीहा के द्वारा मारवाड में राठौड़ राज्य की स्थापना से लेकर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम तक का वृत्तांत मिलता है।

कवि राजा री ख्यात

- इस ख्यात में जोधपुर के नरेश महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के शासन काल के बारे मे विस्तारपूर्वक बताया गया है।
- इसके अतिरिक्त राव जोधा, रायमल, सूरसिंह के मंत्री भाटी गोविन्द दास के उपाख्यान भी शामिल है।

किशनगढ़ री ख्यात

- किशनगढ़ के राठौड़ों का इतिहास

भाटियों री ख्यात

- जैसलमेर के भाटियों का इतिहास

राजस्थानी साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराजरासो	चन्दबरदाई
बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो	शारंगधर
संगत रासो	गिरधर आंसिया
वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
पाथल और पीथल	कन्हैया लाल सेठिया
धरती धोरा री	कन्हैया लाल सेठिया
लीलटांस	कन्हैया लाल सेठिया
रूठीराणी, चेतावणी रा चूंगठिया	केसरीसिंह बारहठ
राजस्थानी कहांवता	मुरलीधर व्यास
राजस्थानी शब्दकोश	सीताराम लीलास
नैणसी री ख्यात	मुहणौत नैणसी
मारवाड रा परगाना री विगत	मुहणौत नैणसी
राव रतन री वेलि (बूँदी के राजा रतनसिंह के बारे में)	कल्याण दास
कान्हड़दे प्रबंध	कवि पद्मनाभ (अलाउद्दीन के जालौर आक्रमण का वर्णन)
राव जैतसी रो छंद	बीठू सूजा
राजरूपक	वीरभान
सूरज प्रकाश	करणीदान (जोधपुर महाराजा अभयसिंह के दरबारी कवि)
वंश भास्कर	सूर्यमल्ल मिश्रण

संस्कृत साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराज विजय	जयानक (कश्मीरी)
हम्मीर महाकाव्य	नयन चन्द्र सूरी
हम्मीर मदमर्दन	जयसिंह सूरी
कुवलयमाला	उद्योतन सूरी

वंश भास्कर /छंद मयूख	सूर्यमल्ल मिश्रण (बूँदी)
नृत्य रत्नकोष	राणा कुंभा
भाषा भूषण	जसवंत सिंह
एकलिंग महात्मय	कुम्भा
ललित विग्रहराज	कवि सोमदेव
राजवल्लभ	मण्डन (महाराणा कुम्भा के मुख्य कवि)
राजविनोद	भट्ट सदाशिव
कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्तकं काव्यम्	जयसोम

अमरसार	पंडित जीवधर
राजरत्नाकर	सदाशिव
अजितोदय	जगजीवन भट्ट (जोधपुर राजा अजीतसिंह के दरबारी कवि)।

फारसी साहित्य	**साहित्यकार**
तारीख -ए-राजस्थान	कालीराम कायस्थ
वाकीया-ए-राजपूताना	मुंशी ज्वाला सहाय

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक युद्ध

वर्ष	युद्ध	के बीच हुआ	परिणाम
1191	तराइन का प्रथम युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	गौरी की हार हुई
1192	तराइन का द्वितीय युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	पृथ्वीराज की हार हुई
1301	रणथंभौर का युद्ध	हम्मीरदेव-अलाउद्दीन खिलजी	हम्मीर की हार
1303	चित्तौड़ का युद्ध	राणा रतन सिंह-अलाउद्दीन खिलजी	राणा रतन सिं की हार
1308	सिवाना का युद्ध	सातलदेव चौहान-अलाउद्दीन खिलजी	साहलदेव की हार
1311	जालोर का युद्ध	कान्हड देव – अल्लाउद्दीन खिलजी	कान्हड देव की हार
12 FEB 1527	बयाना का युद्ध	राणा सांगा -बाबर	राणा सांगा की विजय
1527	खानवा का युद्ध	राणा सांगा - बाबर	राणा सांगा की हार
1544	सुमेल का युद्ध (जैतारण)	मालदेव-शेरशाह सूरी	मालदेव की हार
1576	हल्दीघाटी का युद्ध	महाराणा प्रताप-अकबर	महाराणा प्रताप की हार
1582	दिवेर का युद्ध	महाराणा प्रताप, अमर सिंह - मुगल सेना	महाराणा विजयी
1644	मतीरे की राड़	अमरसिंह (नागौर)- कर्णसिंह	अमरसिंह विजयी
1803	लसवारी का युद्ध	दौलत राव सिंधिया-लॉर्ड लेक	सिंधिया की हार

अन्य पुरावशेष

- **पुरानों में मत्स्य जनपद (**अलवर, भरतपुर, जयपुर, और दौसा) **का उल्लेख मिलता है जिसकी राजधानी विराट नगर (**बैराट– टपुतली – बहरोड़ जिला) थी।
- **स्कंदपुराण** - भारतीय राज्यों की एक सूची देता है जिसमें राजस्थान के कुछ राज्य शामिल हैं - शाकम्भरी सपादलक्ष; मेवाड़ सपादलक्ष; तोमर सपादलक्ष: वागुरी (बेडेड); विराट (बैराट); और भद्र।
- ऑरैल स्टैन अपने सर्वेक्षण कार्य को अप्रैल, 1942 में 'दी जियोग्राफिकल जनरल' में शीर्षक भी 'ए सर्वे वर्क ऑफ एनसियेण्ट साइट्स एलोंग दी लोस्ट सरस्वती रिवर' रखा। [RAS- 2013]
- **चीनी यात्री युआनच्वांग** - पो-ली-ये-ता-लो नामक स्थान का उल्लेख किया है जिसे विराट या बैराट (कोटपुतली -बहरोड़) के समकक्ष माना जाता है।
- रचनाओं द्वारा राजस्थान की **राजनीतिक**, **सामाजिक**, **आर्थिक** और **धार्मिक स्थितियों** पर **प्रकाश**।

2
CHAPTER

राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग

राजस्थान में पुरापाषाण युग (500000 ईसा पूर्व- 10000 ईसा पूर्व)

- इस काल में मानव पत्थर के औजारों का प्रयोग करता था और उसे धातु गलाने और उसे उपकरण निर्माण की कला का ज्ञान नही था।
- पुरापाषाण युग 3 उपयुगों में विभाजित किया जाता है-

निम्न पुरापाषाण युग (5,00,000 ईसा पूर्व - 50,000 ईसा पूर्व)

- मुख्य रूप से अरावली के पूर्व में केन्द्रित है।
- **विशिष्ट पाषाण औजार** - हेंडएक्स, फ्लेक्स और क्लीवर।
- औजार बनाने के लिए कच्चा माल - क्वार्टजाइट, क्वार्ट्ज और बेसाल्ट ।
- राजस्थान में प्रारंभिक पाषाण युग के स्थलों की पहचान एचुलियन संस्कृति (शिकारी संस्कृति) के रूप में फ्रांसीसी साइट सेंट अचेउल के नाम पर रखा गया है।
- राजस्थान के निम्न पुरापाषाण स्थल - मंडपिया, बींगोद, देवली, नाथद्वारा, भैंसरोड़गढ़ और नावघाट।
- भीलवाडा में बनास नदी के किनारे स्थित मंडपिया की खोज वी. एन. मिश्रा ने की थी ।

मध्य पुरापाषाण (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

- राजस्थान में मध्य पुरापाषाण स्थल - लूनी घाटी, पाली और जोधपुर, मोगरा, नागरी, बारिधानी, समदड़ी, लूनी, धुंधाड़ा , श्रीकृष्णपुरा, गोलियो, हुंडगाँव, भावी, पिचाक आदि ।

उच्च पुरापाषाण काल (20,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व)

- महत्वपूर्ण खोज - राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में 40 से अधिक स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिल्के मिले।
- बस्तियाँ - जल के स्थायी स्रोतों के पास स्थित होने की एक विशिष्ट प्रवृत्ति।
- मानव द्वारा कला का सबसे प्रारंभिक रूप शैलचित्र (भीमबेटका) के रूप में उत्तर पुरापाषाण काल का है।
- **राजस्थान में उच्च पुरापाषाण स्थल** - उत्तर पाषाणकालीन औजार एवं अवशेष मुख्यतः चम्बल, भैसरोड़गढ़, नवाघाट, बनास तट पर हमीरगढ़, जहाजपुर, देवली व गिलुण्ड, लूनी नदी के तट पर पाली, समदड़ी, शिकारपुर, सोजत, पीपाड़, खींवसर, बनास नदी के तट पर टोंक में भरनी आदि अनके स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

राजस्थान में मध्यपाषाण युग (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

बागोर
- मध्यपाषाणकालीन स्थल
- भीलवाड़ा के निकट कोठारी नदी के किनारे स्थित |
- यह एक बड़े रेत के टीले के रूप में है जिसे महासती कहा जाता है।
- प्रथम उत्खनन 1967 में वी. एन. मिश्रा और डॉ. एल एस लेश्निक द्वारा ।
- इस स्थल से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं।
- उद्योग की दृष्टि से भारत का सबसे समृद्ध लघुपाषाणिक स्थल है।

- राजस्थान के 2 क्षेत्रों में मध्य पाषाणकालीन स्थल विशेष रूप से खोजे गए हैं -
  - दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (मेवाड़)
  - पश्चिमी राजस्थान में निचला लूनी बेसिन
- हालाँकि अधिकतम लघुपाषाणोपकरण उपयोग करने वाले मध्यपाषाण स्थल अरावली विभाजन के पूर्व में दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में खोजे गए हैं ।
  - उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बागौर
- **स्क्रेपर** –
  - 3 × 10 सेमी लम्बा आयताकार तथा गोल औजार ।
  - एक अथवा दोनों किनारों पर धार और एक किनारा पकड़ने के काम आता था।
- **पॉइंट**
  - त्रिभुजाकार स्क्रेपर के बराबर लम्बा तथा चौड़ा उपकरण हैं।
  - 'नोक' या 'अस्त्राग्र' के नाम से भी जाना जाता था।
  - प्राप्ति - चित्तौड़ की बेड़च नदी की घाटियों में, लूनी व उसकी सहायक नदियों की घाटियों में तथा विराटनगर से।

राजस्थान में नवपाषाण काल

- राजस्थान में मानव मध्यपाषाणकाल से सीधा उत्तर पाषाणकाल में प्रवेश कर गया था।
  - इसलिए राजस्थान में नवपाषाण काल की सभ्यता प्राप्त नहीं होती हैं।
- **राजस्थान में अवशेष** - बनास नदी के तट पर हम्मीरगढ़, जहाजपुर (भीलवाड़ा), लूनी नदी के तट पर समदड़ी (बाड़मेर) तथा भरणी (टोंक)।
- चमकदार मृद्भा**ण्ड**, धूसर म मृद्भा**ण्ड** तथा मंद वर्ण मृद्भा**ण्ड के** अवशेष ।

unleash the topper in you

ताम्रयुगीन सभ्यताए

आहड़ सभ्यता (उदयपुर)

- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम "ताम्रवती" अंकित है। [PC – 2007]
- 10वीं और 11वीं शताब्दी में इसे "आघाटपुर/ आघाट दुर्ग" या "धूलकोट" या "ताम्रवती नगरी", "ताम्बावली" कहा जाता था। [1st/2nd/3rd Gra/CET – 2023/Lab Ass/FG - 2022]
- आयड/ बेड़च नदी के तट पर स्थित है। [3rd Grade -2023]
- यह बनास नदी क्षेत्र [बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी] में होने की वजह से इसे बनास सभ्यता भी कहा जाता है क्योंकि की इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में आहड़ सभ्यता के कई स्थल मौजूद है जैसे गिलुण्ड,ओझियाना, बालाथल, पछमता,भगवानपुरा, रोजड़ी आदि। [CET – 2023, 3rd Grade - 2023]
- **अवधि** – 1900 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में
- **काल** – ताम्र पाषाण काल [Raj PSI -2021]
- **प्रथम उत्खनन कार्य** – 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास की अध्यक्षता में। [2nd/3rd Gra -2023/COPA -2023]
- **अन्य उत्खननकर्ता** – 1953-1956 में आर. सी. अग्रवाल (रत्नचन्द्र अग्रवाल) तथा उसके बाद एच.डी.(हंसमुख धीरजलाल) सांकलिया [CET – 2023]

- आहड़ में खुदाई के बाद एक 4000 साल पुरानी ताम्रपाषाणयुगीन संस्कृति की खोज की गई थी, जिसे धूलकोट नामक एक टीले के नीचे दबा दिया गया था [EO/RO - 2023]
- आहड़ का सम्पूर्ण कालक्रम दो कालखण्डों में बांटा जा सकता है-प्रथम कालखण्ड 'ताम्रयुगीन' व द्वितीय कालखण्ड 'लौहयुगीन' सभ्यता के द्योतक है।

विशेषताएँ [RAS – 2021, ARO -2022]

- **प्रमुख उद्योग** - ताँबा गलाना और उसके उपकरण बनाना
  - ताम्बे की खदाने निकट ही स्थित है।
  - ताँबा (धातु) गलाने की एक भट्टी भी प्राप्त
- निवासी **शवों** को उनके **आभूषणों के साथ दफनाते** थे।
- **माप तोल** के बाट प्राप्त
  - वाणिज्य के साक्ष्य
- लाल व काले **मृद्भाण्ड** का प्रयोग किया जाता था। [2nd Grade -2023]
  - मृद्भाण्ड **उल्टी तिपाई विधि** से बनाये गए है।
- इसे **बनास संस्कृति** भी कहते हैं।

गोरे व कोठ [2nd Grade – 2017]

- आहड़ सभ्यता में पाए गए अनाज रखने के बड़े मृदभांड |
  - प्रमुख खाद्यान्नों - गेहूँ, ज्वार और चावल [2nd Grade-2019]

आहड़ में पाए जाने वाली मुद्राएं

- ताम्बे की 6 यूनानी मुद्राएं और 3 मुहरें • एक मुद्रा पर 1 त्रिशूल और दूसरी ओर अपोलो देवता अंकित है जिसके हाथ में तीर और तरकश है।

  "बनासियन बुल"
- आहड़ से मिली टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ।

  धर्मा संस्कृति
- राजसमन्द में गिलुण्ड से आहड़ की समान धर्मा संस्कृति मिली है ।
- अंतर आहड़ में पक्की ईटों का प्रयोग नही होता था जबकि गिलुण्ड में इनका प्रचुर उपयोग होता था।

प्राप्त वस्तुएँ

- मकानों की **नींवो** में **पत्थरों** का प्रयोग
- **ताँबा गलाने** की **भट्टियाँ** [EO/RO – 2023]
- कपड़े की छपाई हेतु **लकडी** के बने **ठप्पे**
- ईरानी शैली के छोटे **हत्थेदार बर्तन**
- **हड्डी** का **चाकू**
- **सिर खुजलाने** का **यंत्र**
- मिट्टी का **तवा**
- **सुराही**
- एक मकान में **7 चूल्हे** एक पंक्ति में
- टेराकोटा निर्मित **2 स्त्री धड़**
- लेपिस लाजुली -आहड़ के उत्खनन से प्राप्त सामग्री जो बाह्य सम्पर्कों (ईरान) का संकेत देती है।
- रसोई में दो या तीन मूँह वाले चूल्हे तथा बलुए पत्थर के सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं। [Women Supervisor-2019]

महत्वपूर्ण स्थल

पछमता	• उत्खनन वर्ष 2015 • उदयपुर में स्थित है। • हड़प्पा के समकालीन है।

गिलुण्ड सभ्यता	• **राजसमंद** जिले में **बनास नदी** के तट पर स्थित। [Lab Ass/JEN/वनरक्षक -2022]
	• **ग्रामीण** संस्कृति थी।
	• 1957-58 में प्रो.बी.बी. लाल ने गिलुण्ड पुरास्थल के 2 टीलों (स्थानीय रूप से मोडिया मगरी कहा जाता है) का उत्खनन किया।
	• **महत्वपूर्ण स्थल** - बनास व आहड़
	  ○ इसलिए इसे **ताम्रयुगीन सभ्यता** कहते है। [JEN -2020]
	• 100×80 आकार के **विशाल भवनों** के अवशेष ।
	• 5 प्रकार के मृद्भांड प्राप्त:
	  ○ सादे काल, पोलिशदार, भूरे, लाल और काले चित्रित

	• यह ज्यामितीय अलंकरणों के साथ प्राकृतिक अलंकरण में भी उपलब्ध होते हैं। ○ आहड़ में केवल ज्यामितीय अलंकरणों का प्रयोग हुआ हैं।
बालाथल	• **उदयपुर** (राजस्थान) नगर से 42 किमी दक्षिण-पूर्व में वल्लभनगर तहसील में स्थित। [Sci Ass 2019/Raj Police -2022] • 3200 ई. पू. में अस्तित्व में आया। • **नदी** - बेडच [वनरक्षक -2022] • **खोजकर्ता** - 1962-63 में वी .एन .मिश्र द्वारा [वनरक्षक -2022, 3rd Grade -2023] • लोगों ने **पत्थर** और **मिट्टी** की **ईंटों** के बड़े-बड़े मकान बनाये । ○ 11 कमरों के विशाल भवन के अवशेष। [JEN -2016] ○ अन्य ताम्रपाषाणयुगीन स्थलों पर केवल मिट्टी के छोटे मकानों के ही प्रमाण। ○ दुर्गीकरण के पुरावशेष मिले [FSO -2019] • यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है जिसे "**भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण**" माना जाता है। • पूर्वी छोर पर लगभग **5 एकड़** क्षेत्र में फैला एक बड़ा **टीला** है। • **मृद्भाण्ड** ○ **2 प्रकार** के विशेष आकार प्रकार के **चमकदार** मृद्भाण्ड मिले हैं - एक खुरदरी दीवारों वाले तथा दूसरे चिकनी मिटटी की दीवारों वाले। ○ परिष्कृत मृद्भाण्डों में **प्यालियाँ** और **कटोरियाँ** शामिल हैं। • **परवर्ती हड़प्पायुगीन** लौह औजार **प्रचूर मात्रा** में पाये गये । ○ **लोहा गलाने** की **भट्टियाँ** भी प्राप्त हुई। • **योगी** मुद्रा में **शवाधान** किया जाता था। • लोग **कृषि**, **आखेट** तथा **पशुपालन** में लिप्त थे।
ओझियाना सभ्यता	• **भीलवाड़ा** के बदनोर के पास **कोठारी नदी** पर स्थित। [Lab Ass – 2022] ○ आहड़ या बनास संस्कृति का ताम्रपाषाणिक स्थल। • **सफेद बैल** की मृण मूर्तियाँ प्राप्त - **ओझियाना बुल**।
	• **कालखण्ड** - 2000 ई. पू. से 1500 ई. पू. के लगभग । • **उत्खनन** - 1999-2000 में वी आर. मीणा व आलोक त्रिपाठी के नेतृत्व में । [Const -2022] • यह दूसरी नदी किनारे बसने वाली सभ्यताओं के विपरीत पहाड़ी पर स्थित है।

गणेश्वर (नीमकाथाना)

- **नीम-का-थाना** में **कान्तली नदी** के किनारे स्थित है। [EO/RO – 23VDO Mains -22/3rd Gra -23]
- **2800 ईसा पूर्व** में विकसित।
- गणेश्वर सभ्यता - "**पुरातत्व का पुष्कर**"।
- ताम्रयुगीन संस्कृति का **प्रचुर भंडार प्राप्त** ।
  - इसीलिए "**ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी**" **/ ताम्र संचयी संस्कृति** कहा जाता है। [2nd Gra -2023/PTI -2022]
  - युग - ताम्र/काँस्य युग [ARO-22/1st Gra -22/3rd Gra -23
- **उत्खनन** - 1977 में आर. सी. अग्रवाल के नेतृत्व में । [2nd Gra/Lab Ass – 2022]
- **मृद्भांड** - कपीशवर्णी(गैरिक) मृद्पात्र। [School Lect -22]
- **वृहदाकार पत्थर** के बाँध का प्रमाण।
- **मकान पत्थर के** बनाए गए थे। [CET -23/Lab Ass -22]
  - **ईंटो** के उपयोग का कोई **प्रमाण नही** ।
- ताँबे का **बाण** और **मछली** पकड़ने का **काँटा** प्राप्त हुआ। [PTI – 2023]

लाछूरा सभ्यता

- भीलवाड़ा जिले की **आसींद तहसील** में स्थित है।
- **उत्खनन**- 1998-1999 में बी. आर. मीना के निर्देशन में ।
- **अवधि** 700 ई. पू. से 200 ई. तक ।
- **खोजे-**
  - मानव तथा पशुओं की मृण्मूर्तियाँ
  - तांबे की चूड़ियाँ
  - मिट्टी की मुहरें (ब्राह्मी लिपि में 4 अक्षर अंकित) है।
  - ललितासन में नारी की मृण्मूर्ति

- जोधपुरा सभ्यता में "मानव आवास के चिन्ह फर्श व ईंटों की दीवार के रूप में मिलते है।
- मकान की छतों में टाइल्स का प्रयोग किया गया था।

जोधपुरा सभ्यता

- **कोटपूतली - बहरोड़** में **साबी नदी** के किनारे स्थित । [JEN – 2016]
- **लौहयुगीन (पीरियड-III)** प्राचीन सभ्यता स्थल [Ayurveda Lect -2021]
  - लौह धातु का **निष्कर्षण** करने वाली **भट्टियाँ** भी खोजी गई।

- **अवधि** - 2500 ईसा पूर्व से 200 ई.
- **उत्खनन**- 1972-73 में आर .सी. अग्रवाल और विजयी कुमार द्वारा
- **कपिशवर्णी मृद्पात्रों** का भंडार प्राप्त
  - स्लेटी रंग की चित्रित मृद्भांड संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल
- **घोड़े** का उपयोग **रथ खींचने** हेतु किया जाता था।
- मकान की छतो पर **टाईल्स** एवं **छप्पर छाने** का प्रयोग।
- **मुख्य आहार** - चावल व मांस
- **शुंग** व **कुषाणकालीन सभ्यता**

ताम्रपाषाण कालीन स्थल	
स्थल	**विशेषताएँ**
मेहरगढ़	• तीन संस्कृतियों के साक्ष्य प्राप्त - नवपाषाणकालीन, क्वेटा संस्कृति और हड़प्पा कालीन संस्कृति • कपास की खेती का प्राचीनतम साध्य प्राप्त ।
मेढ़ी - पूर्व बलोचिस्तान	• कुल्ली नाल संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल। • ताँबे को गलाकर टिन के निर्माण का साक्ष्य प्राप्त। • दफनाने, दाहसंस्कार एवं कलश शवाधान के साक्ष्य भी प्राप्त ।
आमरी	• पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में स्थित। • चार संस्कृतियों की जानकारी : ○ आमरी संस्कृति ○ हड़प्पा संस्कृति ○ झुकर संस्कृति ○ झांगर संस्कृति
रानाघुन्दई	• पाकिस्तान में गोमलघाटी के झोलारलाई क्षेत्र में स्थित। • खोज: ○ कूबड़दार बैल की मूर्ति ○ सोने की पिन ○ घोड़े की अस्थियाँ प्राप्त हुई हैं।
कोटदीजी	• प्राप्त सोलह स्तर 2 संस्कृतियों से सम्बद्ध है: ○ ऊपर के तीन स्तर हडप्पा काल से ○ एक संक्रमण काल से ○ नीचे के बारह स्तर हड़प्पा पूर्व काल से
कालीबंगा	• पूर्व हड़प्पा संस्कृति तथा हड़प्पा संस्कृति से संबंद्ध ।
मुंडीगाक	• ऊँची दीवार तथा उसके ऊपर धूप में पक्की ईंटों की बुर्ज का साक्ष्य।

प्राक् हड़प्पा, विकसित व उत्तर हड़प्पा संस्कृति

कालीबंगा (हनुमानगढ़)

- प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदी घाटी के बाएँ तट पर वर्तमान में घग्गर नदी के क्षेत्र में ।
  [Raj Police – 2022, Lab Ass – 2022]
- **सर्वप्रथम खोज** – 1952 ई. [Raj Police – 2022]
- **खोजकर्ता** – अमलानन्द घोष। [3rd Grade – 2023]

> - उत्खननकर्ता - 1961 से 69 ई. के मध्य में बी. बी. लाल, बी. के. थापर, श्री एम,डी. खरे, के. एम. श्रीवास्तव, एस.पी. श्रीवास्तव ने करवाया।
>   [1st/2nd Grade – 2022, 3rd Grade - 2023]
>
> **उत्तरदायित्व** - भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली [CET -2023]
>
> **उत्खननकर्ता चरण** - 5
> [CET – 2023, 1st Grade -2022
>
> - **कालीबंगा** की खोज एक इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइगी पियो टेसीटोरी ने की थी। [CET – 2023]

- काली बंगा का शाब्दिक - अर्थ काले रंग की चूड़ियां
- **स्थिति** - राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम में [जेल प्रहरी – 2018]
- जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए
  [Raj PSI – 2021, Lab Ass -2022]
  - इसे संस्कृत साहित्य में "बहुधान्यदायक क्षेत्र" भी कहा जाता है।
  - खेत में "ग्रिड पैटर्न" भी देखा गया था।
  - गेहूँ,जौ चना, बाजरा और सरसों के साक्ष्य भी मिले हैं।
  [Ayurveda Lect – 2021]
- **2900 ईसा पूर्व** तक यहाँ एक **विकसित नगर** था।
- **लिपि**- सैन्धव लिपि
- **कालीबंगा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियाँ**
  - **ताम्र औजार व मूर्तियाँ**
    - साक्ष्य प्रदान करती है कि मानव प्रस्तर युग से **ताम्रयुग में प्रवेश** कर चुका था।
    - **ताँबे** की **काली चूड़ियों** की वजह से ही इसे **कालीबंगा** कहा गया।
  - **मुहरें**
    - सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता की मिट्टी पर बनी **मुहरें प्राप्त**
      - ✓ **वृषभ** व **अन्य पशुओं** के चित्र
      - ✓ **सैन्धव लिपि** में **अंकित लेख** है - अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
  - दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
  - **तौलने के बाट**
    - पत्थर से बने **तोलने के बाट** का उपयोग करना मानव सीख गया था।

Unleash the topper in you

- **बर्तन**
  - मिट्टी के विभिन्न प्रकार के **छोटे-बड़े बर्तन** भी प्राप्त जिन पर **चित्रांकन** भी किया हुआ है।
  - बर्तन बनाने हेतु **'चारु' का प्रयोग** होने लगा था ।

- कालीबंगा से प्राप्त हड़प्पाकालीन मृदभाण्डों को उनके आकार, बनावट और मुख्यतः उनके रंग के आधार पर 6 उपभागों में विभाजित किया गया है।
- अलंकरण के लिए लाल धरातल पर काले रंग का ज्योमितीय, पशुपक्षी का चित्रण बहुतायत से मिलता है। [IPO -2018]

- **आभूषण**
  - **स्त्री व पुरुषों** द्वारा **प्रयुक्त** होने वाले काँच, सीप, शंख, घोंघों आदि से निर्मित आभूषण प्राप्त
  - **उदाहरण** - कंगन, चूड़ियाँ आदि।
- **नगर नियोजन**
  - सूर्य से **तपी हुई ईटों** से बने मकान
  - **दरवाज़े**
  - पाँच से साढ़े पांच मीटर चौड़ी एवं **समकोण पर काटती सड़कें**
  - **कुएँ, नालियाँ** आदि **पूर्व योजना** के अनुसार निर्मित।
  - मोहनजोदडो के विपरीत **घर कच्ची ईंटो** के बने थे।
- **कृषि-कार्य संबंधी अवशेष**
  - **कपास** की **खेती** के अवशेष प्राप्त
  - **मिश्रित खेती** (चना व सरसो) के साक्ष्य।
  - **हल** से अंकित **रेखाएँ** भी प्राप्त जो यह सिद्ध करती हैं कि यहाँ का **मानव कृषि कार्य** भी करता था।

- कालीबंगा में कोई स्पष्ट घरेलु या शहरी जल निकास प्रणाली नहीं थी।
  - केवल लकड़ी की नाली के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- छेद किए हुए किवाड़ और सिंध क्षेत्र के बाहर मुद्रा पर **व्याघ्र का अंकन एकमात्र** इसी स्थान से मिले है।
- मिट्टी की अलंकृत ईंटों से बने चबूतरे, फर्श [CL – 2016]
- कालीबंगा से एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छेद किये जाने का प्रमाण मिला है।
  - शल्य क्रिया का प्राचीनतम उदाहरण
- 2600 ई.पू. में आये **"भूकंप का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य"** मिला है।
- लोहे एवं शैल चित्र का कोई प्रमाण यहाँ नहीं मिला [3rd Grade/PTI(G-II) – 2023]

- पुष्टि **बैल** व अन्य पालतू **पशुओं** की **मूर्तियों** से भी होती हैं
  - **बैल** व **बारहसिंघा** की **अस्थियाँ** भी प्राप्त हुई।
  - **बैलगाड़ी** के **खिलौने** प्राप्त हुए।
- **खिलौने**
  - लकड़ी,धातु व मिट्टी आदि के खिलौने भी मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति यहाँ से प्राप्त हुए हैं जो **बच्चों** के **मनोरंजन** के प्रति **आकर्षण** प्रकट करते हैं।
- **धर्म संबंधी अवशेष**
  - मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति कालीबंगा से **मातृदेवी की मूर्ति नहीं मिली।**
- **सात आयताकार** व **अंडाकार अग्निवेदियाँ** तथा बैल, बारहसिंघे की हड्डियाँ प्राप्त हुई। [Raj PSI -21, Lab Ass/ FG -22]
  - यह साक्ष्य देता है कि मानव **यज्ञ** में **पशु-बलि** भी दिया करते थे।
  - **दुर्ग (किला)**
    - अन्य केन्द्रो से भिन्न एक **विशाल दुर्ग** (दोहरी रक्षा - प्राचीर से घिरा हुआ) के **अवशेष** भी प्राप्त हुए। [CET – 2023]
    - मानव द्वारा अपनाए गए **सुरक्षात्मक उपायों** का **प्रमाण** है।

रंगमहल (हनुमानगढ़)

- हनुमानगढ़ जिले में **सरस्वती नदी / घग्गर नदी** के निकट स्थित हैं। [ARO – 2022]
- **प्रस्तरयुगीन और धातुयुगीन** सभ्यता है।
- **उत्खनन**- डॉ. हन्नारिड के निर्देशन में एक स्वीडिश कंपनी द्वारा वर्ष 1952-54 में किया गया। [JEN -2016]
- **कुषाणकालीन** व उससे पहले की **105 ताँबे की मुद्राएँ** प्राप्त हुई।
- ब्राह्मी लिपि ने नाम से अंकित **2 कांस्य मुहरें** प्राप्त
- मुख्य रूप से **चावल** की **खेती** [ARO – 2022]
- **मकानों** का **निर्माण ईंटो** से हुआ।
- **मृद्भांड** - लाल व गुलाबी रंग के
  - चाक से बने, पतले व चिकने होते थे।
- **गुरु** - शिष्य मृदा मूर्ति मिली।
  - **कुषाण कालीन** सभ्यता के सामान मिले।

बरोर

- गंगानगर में **सरस्वती नदी** के तट पर स्थित।
- **उत्खनन** - 2003 ईमें .।
- **प्राक्, प्रारंभिक** तथा **विकसित हड़प्पा काल** में विभाजित।
- **विशेषता** - मृद्भांडों में **काली मिट्टी** के **प्रयोग** के **प्रमाण** प्राप्त हुए हैं।
  - **वर्ष 2006** - मिट्टी के पात्र में सेलखड़ी के 8000 मनके प्राप्त हुए हैं।
- **हड़प्पाकालीन विशेषताओं के समान** जैसे:
  - सुनियोजित नगर व्यवस्था
  - मकान निर्माण में कच्ची इटों का प्रयोग
  - विशिष्ट मृद्भांड परम्परा
- **बटन** के **आकार** की **मुहरे** प्राप्त हुई।

लौहयुगीन संस्कृति

इसे "आदि आर्यों की संस्कृति" के रूप में स्वीकार किया जा चुका है।

बैराठ सभ्यता

- बैराठ बाणगंगा नदी के किनारे **वर्तमान कोटपुतली - बहरोड़** जिले के **विराट नगर** में स्थित है।
- **लौहयुगीन** सभ्यता है।
- **प्राचीन नाम**- विराटनगर ।
  - **मत्स्य महाजनपद** की **राजधानी।**

[जेल प्रहरी -17/ Women Sup-19]

- **खोजकर्ता** - 1837 में कैप्टन बर्ट।
- **उत्खननकर्ता**- 1936-37 में दयाराम साहनी, 1962-63 में नीलरतन बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित।

[School Lect -2022, 2nd Gra PTI(G-II) – 2023]

- 1837 में **कैप्टन** बर्ट ने बीजक की पहाड़ी से अशोक के **प्रथम भाब्रू शिलालेख** की खोज की थी। [2nd Grade- 2023]

बैराठ का पुरातात्विक महत्त्व
तीन पहाड़ियाँ सर्वप्रमुख – पाषाण ताम्र पाषाण, लौहयुगीन सामग्री अशोक का खंडित शिलालेख, शंख लिपि के प्रमाण बाँध विहार बाँध चेत्य के अवशेष आहत मुद्राएँ यूनानी मुद्राएँ, भारत में द्वितीय नागरीकरण आदि के विस्तृत साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। [Raj Police – 2022]

- बैराठ से बड़ी मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होने के कारण बैराठ को प्राचीन युग की चित्रशाला कहा जाता है। [2nd Grade – 2019]
- उत्तर भारतीय काले चमकदार मृद्भांड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थलों में राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल विराटनगर है।
- रहस्यमयी शंख लिपि के प्रचुर संख्या में प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

- **पुरातत्व** के महत्व की **तीन पहाड़ियाँ**:

[forest guard/ARO/2nd Gra -2022]

  - बीज़क डूँगरी
  - भीम डूँगरी
  - महादेव डूँगरी
- **36 मुद्राएँ प्राप्त** - 8 चांदी के पंचमार्क सिक्के, 28 इंडो-ग्रीक तथा यूनानी [RAS -2018, 3rd Grade/CET - 2023]
- बौद्ध धर्म के **हीनयान सम्प्रदाय** से संबंधित गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष।
- भवन निर्माण के लिए **मिट्टी की ईंटो** का **अत्यधिक प्रयोग।**
- माना जाता है कि इसकी **समाप्ति हूण शासक मिहिरकुल** द्वारा की गई।
- महाभारत के अनुसार, यहाँ में पांडवों ने अज्ञातवास के समय जीवनयापन किया था [Raj Police – 2022]
- यहाँ 300 ई. पू. से 300 ई. तक के काल गोल चैत्यगृह मिला है [3rd Grade – 2023, Lab Ass – 2022]
- बौद्ध संस्कृति, महाभारत काल , महाजनपद काल , मौर्य काल , गुप्त काल , हर्ष काल आदि की जानकारी मिलती है। [EO/RO -2023, CET -2023, Raj Police - 2018]
- यहाँ के निवासी वस्त्र- बुनाई की तकनीक से परिचित थे [2nd Grade - 2023]

रैढ़ सभ्यता [RAS 2023]

- टोंक जिले की **निवाई तहसील** में **ढील नदी** के किनारे स्थित।
- **इसे प्राचीन राजस्थान का टाटानगर** कहा जाता है। [वनरक्षक -2022]
- **उत्खननकर्ता** - 1938-39 में दयाराम साहनी और उसके बाद डॉ. केदारनाथ पूरी द्वारा। [जेल प्रहरी – 2018]
- **3075 आहत मुद्राएँ** तथा **300 मालव जनपद** के **सिक्के** प्राप्त।
  - मालव जनपद की लौह सामग्रियाँ भी मिली अंत: इसे मालव नगर भी कहा जाता है [RAS -2023, Patwar - 2011]
  - यूनानी शासक **अपोलोडोट्स** का एक **खंडित सिक्का** भी प्राप्त हुआ। [JEN – 2016]
- **मृद्भांड चाक** से **निर्मित** मात्रदेवी व शक्ति की मूर्तियों के अवशेष भी प्राप्त।
- **विभिन्न आभूषण** - कर्णफूल, हार, पायल आदि।
- **आलीशान इमारतों** के अवशेष।
- **एशिया** का अब तक का **सबसे बड़ा सिक्को का भण्डार।**

नगर सभ्यता - खेड़ा सभ्यता

- **टोंक** जिले में उणियारा कस्बे के पास स्थित है। [Const-2022, Vet Off -2020]
- **अन्य नाम** -कर्कोट नगर, मातव नगर।
- **उत्खननकर्ता**- 1942-43 में श्रीकृष्ण देव द्वारा ।
- **खोज**-
  - बड़ी संख्या में मालव सिक्के तथा आहत मुद्राएं प्राप्त ।
  - मृदभांडो के अधिकतर अवशेषों का रंग लाल है।
  - उत्खनन से गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति प्राप्त।
  - मोदक रूप में गणेश का अंकन
  - फणधारी नाग का अंकन
  - कमल धारण किए लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा
- वर्तमान में **खेडा सभ्यता** के नाम से जाना जाता है।
- लाल रंग के **मृदभाड़** एवं **अनाज** भरने के **कलात्मक मटकों** के **अवशेष** प्राप्त ।

ईसवाल (उदयपुर)

- 5वीं शताब्दी ई.पू. में **लोहा गलाने का उद्योग विकसित** होने के प्रमाण मिले।
  - **प्राचीन औद्योगिक बस्ती** भी कहा जाता है।
- **उत्खनन** -राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के पुरातत्व विभाग के निर्देशन में ।
  - उत्खनन में **ऊँट के दाँत** एवं **हड्डियाँ** मिली।

- **प्राक् ऐतिहासिक** काल से **मध्यकाल** तक का प्रतिनिधित्व करने वाली **मानव बस्ती** के प्रमाण पाँच स्तरों से प्राप्त।
- प्राप्त सिक्कों को **प्रारंभिक कुषाणकालीन** माना जाता है।
- **मकान पत्थरों** से बनाये गए।

नोह (भरतपुर)

- **उत्खनन** - 1963-64 में रतनचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में।
- **अवधि** - 1100 ई.पू. - 900 ई.पू.
- **मृद्भांड** - काले व लाल मृद्भांड संस्कृति
- मौर्यकालीन पॉलिस की हुई विशालकाय **यक्ष/ जाखबाबा** प्रतिमा और 16 रिंगवेल प्राप्त हुई है [JSA -2019, JEN – 2016]
- उत्खनन से ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं [FSO-2023]

चन्द्रावती (आबू-सिरोही)

- एक "**अनाज ग्रह का कोठार**" प्राप्त हुआ है।

भीनमाल, जालौर [Constable – 2022]

- **उत्खनन**- 1953-54 में रतनचंद्र अग्रवाल के निर्देशन में ।
- **मृदपात्रों** पर **विदेशी प्रभाव** था।
- खुदाई से मृद्भाण्ड तथा **शक क्षेत्रों** के **सिक्के** प्राप्त हुए हैं ।
- **रोमन ऐम्फोरा/ यूनानी दुहत्थी** सुराही भी प्राप्त हुए हैं।
- ईसा की **प्रथम शताब्दी** एवं **गुप्तकालीन अवशेष** प्राप्त हुए हैं।
- संस्कृत विद्वान **महाकवि माघ** एवं **गुप्तकालीन विद्वान ब्रह्मगुप्त** का **जन्म स्थान** माना जाता है ।
- चीनी यात्री **ह्वेनसांग** ने यात्रा की।

जूनाखेड़ा (पाली)

- **खोजकर्ता** - 1883-84 में एच.डब्ल्यू.बी.के. गैरिक द्वारा।
- **मिट्टी के बर्तन** पर **शालभंजिका** का अंकन ।

नगरी सभ्यता/ मध्यमिका

- यह सभ्यता चित्तौडगढ में बेड़च नदी के तट पर स्थित है जिसका प्राचीन नाम मध्यमिका है।
- इस सभ्यता की खोज 1872 ई. में कार्लाइल द्वारा की गई।
- सर्वप्रथम उत्खनन 1904 ई. में डॉ. डी. आर. भण्डारकर द्वारा तथा तत्पश्चात 1962-63 में केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया।
- यहाँ से शिवि जनपद के सिक्के तथा गुप्तकालीन कला के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- प्राचीन काल में माध्यमिका पतंजलि के महाभाष्य में तथा महाभारत में मिलता है।
- नगरी सभ्यता से ही घोसूण्डी अभिलेख (द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व) प्राप्त हुआ है।
- नगरी शिवि जनपद की राजधानी रही है।
- मध्य पुराषाणकाल के उपकरण चित्तौड़गढ़ जिले के बनास-बेड़च नदी तंत्र की वागन और कादमाली नदी घाटियों तथा कोटा में चंबल नदी घाटी में पाए गए हैं। [EO/RP – 2023]

राज्य की प्रमुख संस्कृतियाँ निम्नलिखित हैं

आर्य सभ्यता

- यह एक **ग्रामीण सभ्यता** के रूप में विकसित हुई।
- आर्यवासियों ने **पशुपालन** के साथ **कृषि** को भी अपनाया था।
- राजस्थान में **आर्य** सर्वप्रथम **उत्तर पूर्वी भाग** में आकर बसे।
- **विकास** - 1000-600 ईसा पूर्व ।
- **प्रमाण** – अनूपगढ़ जिला व तरखान वाला डेरा (श्री गंगानगर) से प्राप्त।
- **अधिकांश** मात्रा में **मिट्टी के बर्तन** मिले हैं।
- **महत्वपूर्ण स्थल**- जोधपुरा, बैराठ (कोटपुतली-बहरोड़), नोह (भरतपुर), सुनारी (नीमकाथाना)।

बागोर सभ्यता

- भीलवाड़ा के निकट **कोठारी नदी** के किनारे स्थित। [ACF/FRO -2021,वनपाल -2022]
- **पाषाणकालीन सभ्यता** स्थल है।
- **उत्खननकर्ता** – 1967-68 में डॉ. वीरेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. एल.एस .लेश्निक [AAO -2022]
- **मुख्य उत्खनन स्थल -** महासतियों का टीला [प्रवक्ता (DoTE) -2021]
- "**आदिम संस्कृति का संग्रहालय**" माना जाता है
- **14 प्रकार** की **कृषि** के अवशेष मिले है।
- **मुख्य कार्य** - कृष, पशुपालन व आखेट
  - **कृषि** व **पशुपालन** के **प्राचीनतम** साक्ष्य मिले।
- **पाँच मानव कंकाल प्राप्त -** जो सुनियोजित ढंग से दफ़नाए गये थे।
  - एक कंकाल के गले में पत्थर व हड्डियों का हार पाया गया [1st Grade – 2022]
- **पाषाण** युग की **सर्वाधिक** सामग्री प्राप्त ।
  - **मुख्य उपकरण**- ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपेर, चंद्रिक
  - इसके **अतिरिक्त** तक्षणी, खुरचनी, तथा बेधक भी बड़ी मात्रा में प्राप्त ।
- मानव **संगठित सामाजिक जीवन** से **दूर।**
- **फर्श** बनाने के लिए **पत्थर** लाये गये थे और यहाँ **फूस** के **वातरोधी पर्दे** भी बनाये गये।
- **उद्योग** - बहुत ही छोटी-**छोटी वस्तुओं** का **निर्माण** और **ज्यामितीय प्रारूपों** की दृष्टि से अत्यंत **उन्नत** ।

सुनारी सभ्यता

- नीमकाथाना की **खेतड़ी तहसील** में **कान्तली नदी** के किनारे स्थित।
- **उत्खनन**- 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा।
- **लोहा गलाने** की **प्राचीनतम भट्टियाँ** प्राप्त ।
- स्लेटी रंग के **मृदभांड प्राप्त** ।
  - मौर्यकालीन सभ्यता के **अवशेष** जिनमें **काली पॉलिश** युक्त **मृदपात्र** है।
- मातृदेवी की **मृण्मूतियाँ** तथा **धान संग्रहण** का **कोठा** भी प्राप्त ।
- **शुंग** तथा **कुषाणकालीन अवशेष** भी प्राप्त ।
- **निवासी चावल** का **प्रयोग** करते थे तथा घोड़ों से रथ खींचते थे।

Unleash the topper in you

- लोहे के तीर, भाले के अग्रभाग, लोहे का कटोरा तथा कृष्ण परिमार्जित मुदपात्र भी मिले हैं।

नलियासर सभ्यता

- **जयपुर ग्रामीण** में स्थित है।
- **चौहान वंश** से **पूर्व** की **सभ्यता** के प्रमाण प्राप्त हुए।
- ब्राह्मी लिपि में **लिखित** कुछ **मुहरें** प्राप्त हुई।
  - आहत मुद्राएँ, उत्तर इण्डोसेनियन सिक्के, कुषाण शासक हुविस्क, इण्डोग्रीक, यौधेयगण तथा गुप्तकालीन चाँदी के सिक्के प्राप्त ।
  - 105 कुषाणकालीन सिक्के ।
  - **अवधि** : तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी सदी तक।

कुराड़ा सभ्यता

- **परबतसर (डीडवाना – कुचामन)** में स्थित है। [3rd Grade – 2006]
- **ताम्रयुगीन** सभ्यता स्थल।
- ताम्र उपकरणों के अतिरिक्त **प्रणालीयुक्त अर्घ्यपत्र** प्राप्त हुआ है।

किराडोत सभ्यता

- **जयपुर ग्रामीण** में स्थित है।
- **ताम्रयुगीन 56 चूड़ियाँ** प्राप्त ।
  - अलग-अलग आकार की **28 चूड़ियों** के 2 सेट पाए गए।

गरड़दा सभ्यता

- **बूँदी** में **स्थित** है।
- **छाजा नदी** के किनारे स्थित है।
- पहली **बर्ड राइडर रॉक पेंटिंग** प्राप्त ।
  - देश में **प्रथम पुरातत्व महत्त्व की पेंटिंग।**

आलनिया सभ्यता

- आलनिया नदी (कोटा)
- चट्टानेश्वर मंदिर के पास पाँच समूहों में प्रागैतिहासिक एवं अन्य काल 35 शैलाश्रय खोजे गई ।
- **खोजकर्ता** - डॉ. जगतनारायण श्रीवास्तव, डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर [Patwar Mains- 2016]

कोटड़ा सभ्यता

- **झालावाड़** में स्थित है।
- **उत्खनन** - 2003 में दीपक शोध संस्थान द्वारा ।
- **अवधि**- 7वीं से 12वीं शताब्दी मध्य के अवशेष ।

मलाह सभ्यता

- भरतपुर जिले के **घना पक्षी अभयारण्य** में स्थित है।
- अधिक संख्या में **ताँबे** की **तलवारे** एवं **हारपुन प्राप्त।**

कणसव सभ्यता

- **कोटा** में स्थित है।
- मौर्य शासक **धवल** का **738 ई. से संबंधित लेख** प्राप्त।

नैनवा सभ्यता

- **बूँदी** में स्थित है।
- **उत्खनन**- श्रीकृष्ण देव द्वारा।
- 2000 वर्ष पुरानी **महिषासुरमर्दिनी** की **मृण्मूर्ति** प्राप्त।

> सी.ए. हैकेट ने बूँदी और जयपुर, इन्द्रगढ में यहाँ से क्वार्टजाइट से बनी पूर्व पाषाणकालीन हस्तकुठार (कुल्हाड़ी) सर्वप्रथम प्राप्त की थी [वनपाल -2022/EO/RO – 2023]

डडीकर सभ्यता

- **अलवर** में स्थित है। [FSO -2019]
- पाँच से सात हजार वर्ष पुराने **शैलचित्र प्राप्त**।

सोंथी सभ्यता

- **बीकानेर** में स्थित है।
- **खोजकर्ता**- अमलानंद घोष (1953 में)।
- **कालीबंगा प्रथम** के नाम से प्रसिद्ध।
- **हड़प्पाकालीन सभ्यता** के **अवशेष** प्राप्त।

बांका सभ्यता

- **भीलवाड़ा** जिले में स्थित है।
- राजस्थान की **प्रथम अलंकृत गुफा** की खोज।

गुरारा सभ्यता

- **गुरारा गाँव श्री माधोपुर तहसील (नीमकाथाना)** जिले में स्थित है।
- **चाँदी** के **2744 पंचमार्क सिक्के** मिले।

बयाना सभ्यता

- **भरतपुर** में स्थित है।
- **प्राचीन नाम** -श्रीपंथ
- गुप्तकालीन सिक्के एवं **नील** की **खेती** के साक्ष्य प्राप्त।

तिलवाड़ा सभ्यता

- बालोतरा जिले में **लूणी नदी** के **किनारे** स्थित है।
- **उत्खनन**: 1967-68 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा ।
  - **उत्खननकर्ता**- डॉ. वी. एन. मिश्र के नेतृत्व में।
- एक **ताम्र पाषाणकालीन स्थल है।**
- **अवधि**- 500 ई. पू. से 200 ई. तक।
- **खोज** -
  - उत्तर पाषाण युग के भी अवशेष प्राप्त ।
  - पाँच आवास स्थलों के अवशेष।
  - एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव अस्थि भस्म तथा मृत पशुओं के अवशेष मिले।

राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल

काल	स्थल	औज़ार
पुरापाषाण [पशुधन सहायक – 2022, SCI - 2022]	• डीडवाना (प्राचीनतम स्थल), जायल (नागौर),बैराठ (कोटपुतली – बहरोड़) • भानगढ़ (अलवर), इंद्रगढ़ (कोटा) • बूढ़ा पुष्कर (अजमेर)	हैण्डएक्स क्लीवर चापर चैपिंग

Unleash the topper in you

मध्यपाषाण (माइक्रोलिथ) [Ass Prof – 2021/Const - 2022]	• बागोर (भीलवाड़ा) • बैराठ (कोटपुतली-बहरोड़) • सोजत • धनेरी • तिलवाड़ा	स्क्रेपर प्वाइंट
नवपाषाण	• इस काल में कोई भी सभ्यता या संस्कृति राजस्थान में नहीं मिलती है।	सेल्ट बसूला कुल्हाड़ी
ताम्रपाषाण	• आहड़ (उदयपुर) • गिलुण्ड(राजसमन्द) • कालीबंगा(हनुमानगढ़) • झर (जयपुर ग्रामीण) • बागोर (भीलवाड़ा) • तिलवाड़ा (बाड़मेर) • बालाथल (उदयपुर)	विविध प्रकार के औज़ार
ताम्रयुगीन [3rd Grade / RAS -2023]	• नीमकाथाना • बेणेश्वर (डूँगरपुर) • नंदलालपुरा • किराड़ोत • चौथवाडी (जयपुर ग्रामीण) • साबणियां • पूंगल (बीकानेर) • कुराड़ा (परबतसर) • पिण्ड पाड़लिया (चित्तौड़) • पलाना (जालौर) • कोल माहौली (सवाई माधोपुर) • मलाह (भरतपुर)	विविध प्रकार के औज़ार
लौहयुगीन	• नोह (भरतपुर), बैराठ, जोधपुरा • सांभर (जयपुर), सुनारी (नीमकाथाना), रैढ • नगर	विविध प्रकार के औज़ार
	• नैनवा (टोंक), भीनमाल (जालौर) , नगरी (चित्तौड़गढ़) • चक - 84 • तरखानवाला (गंगानगर)	

विभिन्न स्थल और उनके उत्खननकर्ता

स्थल/ सभ्यता	उत्खननकर्ता
इंद्रगढ़ और जयपुर	1870 में सी.ए. हैकेट द्वारा
झालावाड़	1928 में सेटनकार द्वारा
नगरी	डॉ. भंडारकर, सौन्दराजन केन्द्रीय पुरातात्विक विभाग
कुराड़ा	1934 में पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा
बैराठ	दयाराम साहनी, नीलरत्न बनर्जी , कैलाशनाथ दीक्षित
रैढ	डॉ. केदारनाथ पूरी, पी.ए. चक्रवर्ती, विजयकुमार
कालीबंगा	अमलानंद घोष, बी.बी. लाल, जे.वी. जोशी, बी.के. थापर
रंगमहल, बड़ोपोल डाबरी	डॉ. हन्नारिक
आहड़	अक्षयकीर्ति व्यास, आर.सी. अग्रवाल, वी.एन. मिश्र, एच.डी. सांकलिया
जोधपुरा	आर.सी. अग्रवाल, विजयकुमार
भीनमाल	आर.सी. अग्रवाल
गिलुण्ड	बी.बी. लाल
नोह	आर.सी. अग्रवाल
बालाथल	वी.एन. मिश्र, वी.एस. सिंह, आर.के. मोहन्त, देव कोठारी
ओझियाना	भारतीय सर्वेक्षण विभाग
गणेश्वर	आर.सी. अग्रवाल
बागोर	वी.एन.मिश्र, एस.एल. लैशानी